वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई - पत्रिका

# वेदान्त पीयूष

वर्ष २४ दिसम्बर - २०२४ प्रकाशन - १२

ग्राण्डाला

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

# वेदान्त पीयूष

## दिसम्बर २०२४

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

# वेदान्त पीयूष

## विषय सूचि


| | | |
|---|---|---|
| 1, | प्रकाशक पृष्ठ | 02 |
| 2. | श्लोक | 05 |
| 3. | पू. गुरुजी का संदेश | 06 |
| 4. | वाक्यवृत्ति | 10 |
| 5. | गीता और मानवजीवन | 15 |
| 6. | जीवन्मुक्त | 20 |
| 7. | श्री कौशल्या चरित्र | 24 |
| 8. | कथा | 28 |
| 9. | आश्रम-मिशन समाचार | 31 |
| 10. | आगामी कार्यक्रम | 50 |
| 11. | इण्टरनेट समाचार | 53 |
| 12. | लिन्क | 54 |


दिसम्बर 2024

ज्ञातृज्ञानज्ञेयभेदः परे नात्मनि विद्यते।
चिदानन्दैकरूपत्वात् दीप्यते स्वयमेव हि॥

(श्लोक - ४०)

परमात्मा चिदानन्द स्वरूप होने के कारण उनमें ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय का भेद नहीं है। एक होने के कारण वह स्वयं सर्वत्र प्रकाशित है।

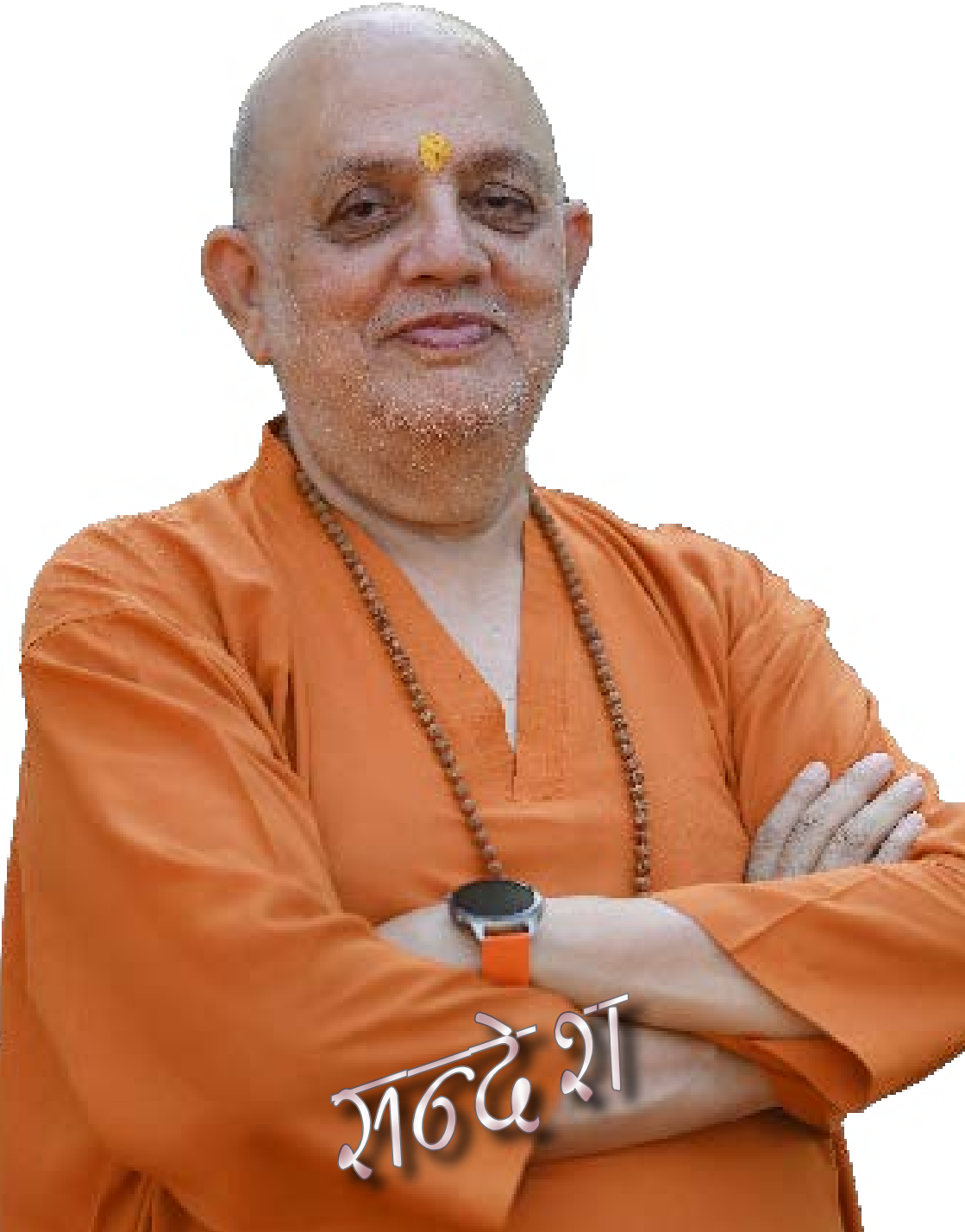
सदेश

# पंचक्लेश – १

हरेक व्यक्ति संसार के क्लेशों से पीड़ित होता नज़र आता है। इन पीड़ाओं की निवृत्ति के लिए यथा समझ यथोचित उपचार भी करता है। कभी बाह्य जगत में परिस्थिति को परिवर्तित करने का प्रयास करता है, तो कभी परिस्थिति से पलायन की चेष्टा करता है। कभी कष्टों से मुक्ति के लिए प्रार्थना का भी आश्रय लेता है। यह समस्त उपचार सीमित ही नज़र आते हैं। इससे कुछ क्षणों की राहत तो अवश्य प्राप्त होती है। किन्तु उससे आत्यन्तिक मुक्ति का अनुभव नहीं हो पाता। इसके लिए आवश्यक है इन क्लेशों को समझना तथा उनके होने का कारण समझना। यदि इसे समझा जाता है तो ही उसके उपचार की सही दिशा मिल पाती है। इन क्लेशों पर मनीषियों ने गहराई विचार करके उसे मोटे तौर से पांच प्रकार के बताये हैं। वे हैं – अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश। ये पांच क्लेश अपने जीवन से सदैव जुड़े हुआ प्रतीत होते है।

# पंचक्लेश – १

वस्तुतः यह पांच वस्तु अपने आप में कभी भी क्लेश रूप अथवा पीड़ा का कारण नही बनते हैं। किन्तु यह क्लेश बनकर पीड़ा कब देते हैं, उसके रहस्य को अच्छी तरह से समझना चाहिए तथा उनकी पीड़ा का अवलोकन करना चाहिए। इन क्लेशों में सर्व प्रथम क्लेश अविद्या को बताया। अविद्या ही बाकी समस्त क्लेशों की जड़ होती है। वैसे अविद्या अपने आप में दोषवान नहीं होती है। इस वैविध्यपूर्ण जगत में हम अनेकों वस्तुओं को नहीं जानते हैं, किन्तु उससे कोई हानि नहीं दिखाई पड़ती। यहां तक कि अपनी सुषुप्ति अवस्था का अनुभव जहां हमें न अपने बारे में ज्ञान है, और नहीं जगत के विषयों का ज्ञान, तथापि वहां किसी प्रकार का क्लेश नहीं होता है। तद्वि परीत वह हमारे लिए सुखदायी होती है। परन्तु अज्ञान समस्या तब बनता है कि जब अज्ञान होने के उपरान्त उसके बारे में विपरीत ज्ञान व कल्पनाएं होती है। अविद्या के कार्य रूप यह विपरीत ज्ञान ही क्लेश का कारण बनता है।

अज्ञान दो धरातल पर होता है। १. द्रष्टा विषयक २. दृश्यविषयक। जब द्रष्टाविषयक अज्ञान होता है, तो अपनी वास्तविकता जो कि मूलरूप से पूर्ण, दिव्य ब्रह्मस्वरूप है, उसे नहीं जानते हैं। नहीं जानने की अवस्था घूटनयुक्त प्रतीत होती है, अतः अपने बारे में प्रमाणपूर्वक विचार करके सत्य को जानने के बजाय कुछ न कुछ कल्पना का आश्रय लेते है। अपने बारे में अपूर्णता

की कल्पना करके अपने आपको देश एवं काल से सीमित जीव मानने लगते हैं। परम्परा से कभी देह, कभी मन की विविध वृत्तियां, कभी बुद्धि के ज्ञान आदि से तादात्म्य उत्पन्न करके अपने आपको वह ही मैं हूं। इस प्रकार मानने लगते हैं। इसके उपरान्त अपनी काल्पनिक अपूर्णता को दूर करने का प्रयास होता है। अपूर्णता को दूर करने का संकल्प ही भोक्तृत्व है, उसके उपरान्त हमें कुछ न कुछ कर्म का आश्रय लेना होगा। अर्थात् हम कर्तृत्व-भोक्तृत्व के धरातल पर आ गए।

देहादि के धरातल का ही बाह्य जगत अनुभव का विषय है। इस दृश्य जगत की भी वास्तविकता का अज्ञान होने से उसे सत्य मान लिया जाता है। साथ ही यही हमारी अपूर्णता को दूर करने का हेतु है। यह मानकर उस दिशा में प्रवृत्ति होने लगती है। जब अपने बारे में समझ ही गलत रखी है, तो बाह्य कितना भी प्रयास हो जाए, कितने भी दिव्य भोगों का अनुभव प्राप्त कर लें तो भी कल्पना का अन्त नहीं होता है। हमारी अनन्त खोज की यात्रा प्रारम्भ हो जाती है। इसे ही संसरण कहा जाता है। ऐसी अविद्या ही सर्वप्रथम क्लेश का कारण होती है, यह ही संसार की जड़ है। अविद्या के कारण ही अपने बारे में किया गया विपरीत निश्चय हमारी अस्मिता रूप क्लेश बनने लगता है।

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

# वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्वं परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्यान्घ्रि पद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

# श्लोक – १७

संघातोऽपि तथा नाहम्
इति दृश्य विलक्षणम्।
दृष्टारमनुमानेन
निपुणं सम्प्रधारय॥

उसी प्रकार दृश्य से विलक्षण मैं संघात नहीं हूं, इस अनुमान के द्वारा अपने दृष्टापने का तुम निश्चय करों।

# वाक्यवृत्ति

पूर्व श्लोक में आचार्य ने बताया कि हम द्रष्टा सदैव दृश्य से विलक्षण होता है। उस युक्ति के आधार पर हम इन्द्रियां, मन, बुद्धि और प्राण के जाननेवाले होने से हम वह नहीं है; यह निश्चयपूर्वक बताया।

पूर्व में स्थूल देह, सूक्ष्म देह से मन, प्राण, इन्द्रियां बताएं। जिस प्रकार कोई मोटर-गाड़ी मात्र पहिये नहीं होती है, तथा मात्र उसका ढांचा, अन्दर की सीटें, स्टियरिंग, या उसके अन्दर की बेटरी या मोटर नहीं होती है। किन्तु इन सब का मिला-झूला संघात ही गाड़ी है। उसी प्रकार से हमारी इन्द्रियांमात्र, या मन, प्राण, शरीर मात्र उपाधि नही है। किन्तु उन सब के संयोग से जो बना है, वह संघात है। शरीर का हाथ भी हम है, पैर भी हम है, इन्द्रियां भी हम है, प्राण भी हम। मन-बुद्धि भी हम है इस प्रकार पूरे संघात में आज आत्मबुद्धि बहुत दृढ़ता से विद्यमान

है। आचार्य उन प्रत्येक अवयव के संयोग से बनी उपाधि को संघात बता रहे है। उसे ही कहीं देहत्रय तो कहीं पंचकोश के द्वारा बताया जाता है। संघात सदैव अवयवों से बना होता है।

आचार्य बताते हैं कि संघातोऽपि तथा नाहं। यह संघात भी हम नहीं है। उसके लिए पहली युक्ति बताई कि हम उसके द्रष्टा है। संघात के किसी भी अवयव में किसी प्रकार की वृद्धि, क्षय अथवा विकार होने से अपने अन्दर ही वृद्धि आदि विकार मान लिया जाता है। जो कि हमारे लिए यह ज्ञान का विषय अर्थात् द्रश्य है और हम उसके द्रष्टा है। जैसे बताया कि जाननेवाला द्रष्टा सदैव दृश्य से भिन्न होता है। वैसे ही हम अपनी इन्द्रियादि संघात से भिन्न है।

दूसरी युक्ति यह है कि संघात अवयववान होने से नाशवान है। तथा परार्थो हि अयं

देहः। जिस प्रकार गाड़ी रूप संघात अपने से पृथक् उसके स्वामी के लिए होती है। स्वयं जड़ होने से उसका चालक उससे भिन्न होता है। गाड़ी में समस्या होने से उसका चालक अविकारी, असंग रहता है। वैसे ही यह देहादि संघात अवयववान, हमसे पृथक् और हमारी सेवा के लिए होता है। स्वतः जड़ होने से उसे कार्य में सक्षम हम बनाते है। उसमें सतत हो रहे विकारों को हम जाननेवाले उनसे पृथक् है। इस प्रकार इन युक्तिओं के माध्यम से स्वयं को उसका द्रष्टा और उससे पृथक् होने का निश्चय करें।

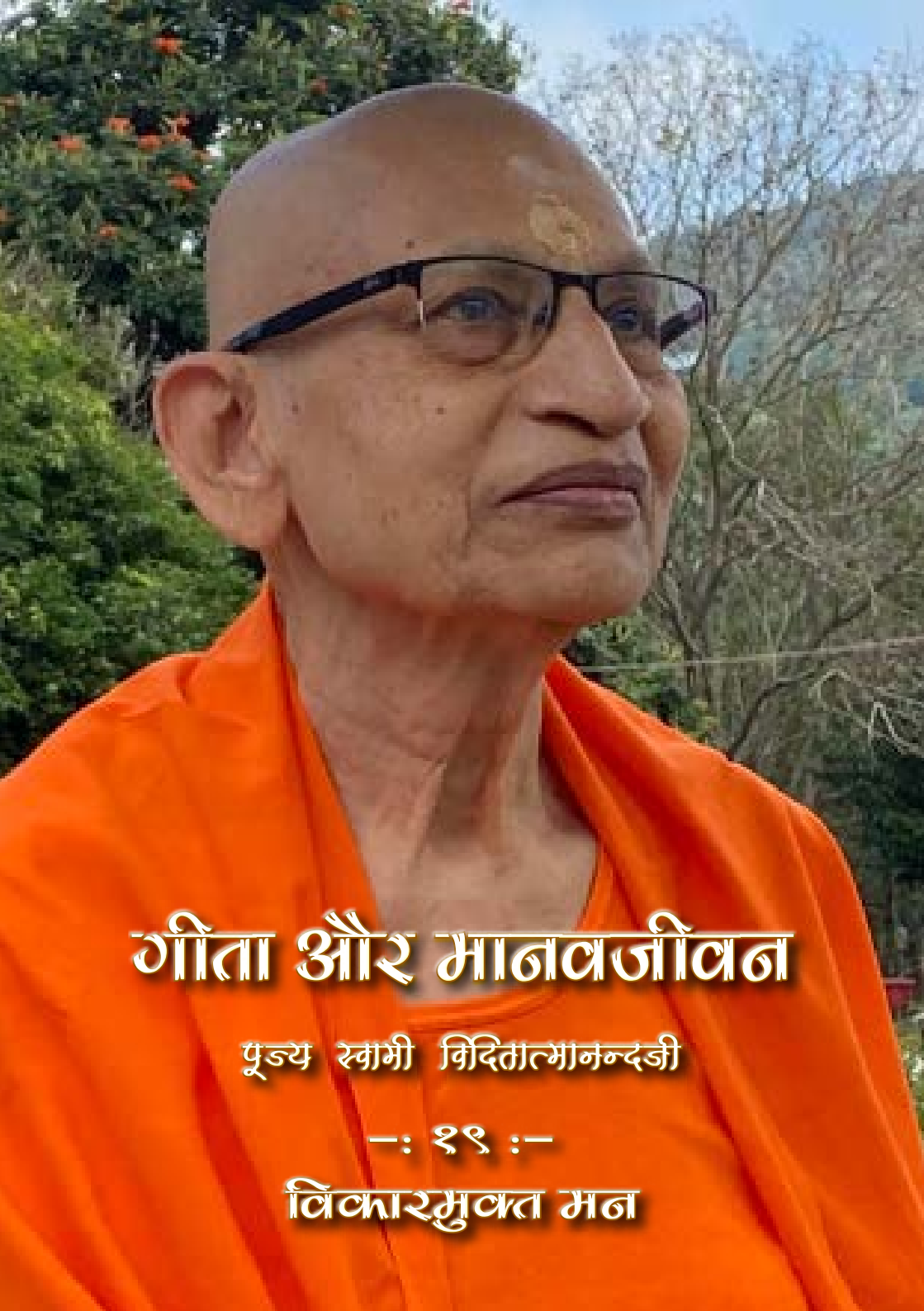

# गीता और मानवजीवन

पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी

–: १९ :–

## विकारमुक्त मन

# गीता और मानवजीवन

एक भाई ने हमें कहा, 'स्वामीजी! आप जो कहते हैं कि जीवन की प्रत्येक परिस्थिति ईश्वर का प्रसाद है। इसका अर्थ यह हुआ कि जो कुछ है, उसे यथावत् स्वीकार कर लेना। लोग हम पर अत्याचार करे, शोषण करें, जानबुझ कर हमें त्रस्त करते हो, पूर्णतः अन्याय हो रहा हो, तो क्या यह सब यथावत् स्वीकार करें? तो इसका जवाब है, 'नहीं। परिस्थिति स्वीकार कर लेना उसका अर्थ यह नहीं है कि हमें किसी प्रकार की प्रतिक्रिया अभिव्यक्त नहीं करनी अथवा आवश्यकता होने पर परिस्थिति का सामना नहीं करना है। परिस्थिति को ईश्वर का प्रसाद मानकर स्वीकार कर लेने का अर्थ इतना ही है कि परिस्थिति के लिए किसी प्रकार का द्वेष नहीं होना। अर्थात् राग-द्वेष से प्रभावित हुए बगैर व्यवहार करना, उसका सामना करना। उपस्थित परिस्थिति में जो भी हमारा कर्तव्य हो, जो उचित है, वह करना ही चाहिए। अन्याय हो रहा हो और उसके सामने लड़ने की मेरी ताकत हो तो अवश्य लड़ना चाहिए। प्रतिकूल परिस्थिति को अनुकुल बनाने की अपने में क्षमता हो तो अवश्य प्रयत्न करना चाहिए किन्तु क्रोध या द्वेष से नहीं। किसीने

# गीता और मानवजीवन

हमारे साथ दुर्व्यवहार किया इसलिए हमें उनके प्रति द्वेष और जो अपने क्रोध के आवेग में आकर प्रतिक्रिया करना–वह उचित नहीं है। ऐसे व्यवहार व आचरण को कर्म नहीं कहा जा सकता है। उसे तो प्रतिक्रिया कहेगे। क्रोध या द्वेष से प्रेरित कर्म अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप नहीं होगा। और हम जो कर्म सिद्ध करना चाहते है, वह सिद्ध भी नहीं हो पाएगा। उचित तो यह है कि प्रतिकूल परिस्थिति में भी मन की स्वस्थता बनाए रखकर उसका सामना करे। इसे ही परिस्थिति की स्वीकृति कहा जाता है।

संक्षेप में, परिस्थिति स्वीकार कर लेना अर्थात् स्वस्थता बनाए रखना, किसी प्रकार के आवेश में नहीं आना। कईबार हम ऐसे राग–द्वेष के आवेश के प्रभाव में होते है, क्योंकि बचपन से ही हम क्रोध या द्वेष को पोषित करते आए है। और इसलिए यह विकृतियां अपने में दृढ़ हो गई होती है। जीवन में कइ बार परिस्थितियां अनुकुल नहीं होती। अनेकों प्रकार की प्रतिकूलता का अनुभव बाल्यावस्था से करते आए है। अपनी सभी इच्छाएं पूरी नहीं होती है। कई बार अपनी अनेकों इच्छाओं के विपरीत समझोता करना पडता है। छोटे थे, तो चाकलेट खाने

# गीता और मानवजीवन

की इच्छा होने पर मां ने मना कर दिया, स्कुल से पिकनिक जाने की इच्छा थी, सौ रूपये भरने थे, पिताजी ने बोल दिया कि, 'नहीं मिलेगा।' बार-बार अपनी इच्छाओं का अनादर होता रहा है। अनेकानेक प्रतिकुल अनुभव होते आए है। परिवार में, स्कुल में, कालोनी में सर्वत्र। उनके समक्ष अपना द्वेष जगे, क्रोध भी आए फिर भी मजबुरी में इन सबको अपने मन में समा लिया करते थे। किन्तु मन में भरी-पड़ी विकृतियां समय आने पर अभिव्यक्त होती है। आजकल तो घर में, आफिस में, यात्रा में, सामाजिक प्रसंगों में, अन्योन्य कैसे परेशान करना यही प्रवृत्ति चल रही हो - ऐसा लगता है। उसको लेकर निराशा, हताशा पैदा होती है।

हम अपनी अनेको आन्तरिक कमजोरीयों के सभान होते है। मन कि किए अनेकों संकल्प कई बार क्रियान्वयन नहीं कर पाते है। सुबह जल्दी उठने का निश्चय करके नहीं उठ पाएं, उससे मन में अपने पर ही गुस्सा आती है। बार-बार निश्चय करे कि अन्य के प्रति क्रोध नहीं करना है, फिर भी समय आने पर स्वतः क्रोध हो जाता है। इसलिए मन में हताशा जन्म लेती है। सत्य बोलने का नियम लिया हो और कभी झूठ बोल

दिया जाए तो निराशा। इस प्रकार अपने आपके लिए भी अनेको मापदण्ड निश्चित किए होते है। किन्तु सदैव हम उसके अनुरूप जी नहीं पाते है। इस कारण आत्म-तिरस्कार जन्मता है। राग, द्वेष, इर्ष्या, भय, आत्मतिरस्कार, निराशा ऐसी अनेकों प्रकार की वृत्तियां अपने में होने के कारण परिस्थिति को यथावत् बहुत कम देख पाते है। इन सब विकारों के कारण परिस्थिति पर आरोप करके परिस्थिति का मूल्यांकन करते है। इसलिए परिस्थिति जैसी है, वैसी तो बहुत कम देख पाते है।

मन में इस प्रकार के विकार हो, अनेकानेक ग्रंथियां हो, विषाद हो या तनाव हो ऐसे में अपना मन आनन्दित, प्रसन्न नहीं हो सकता है। हम प्रसन्न तब ही हो सकते है कि जब मन इन समस्त विकारों से मुक्त हो। मन को विकारों से मुक्त रखकर परिस्थिति का सामना करना ही परिस्थिति की प्रसन्नतापूर्वक की स्वीकृति, प्रभु के प्रसाद की तरह स्वीकृति है।

# जीवनमुक्त

— ५४ —

# केदारनाथ

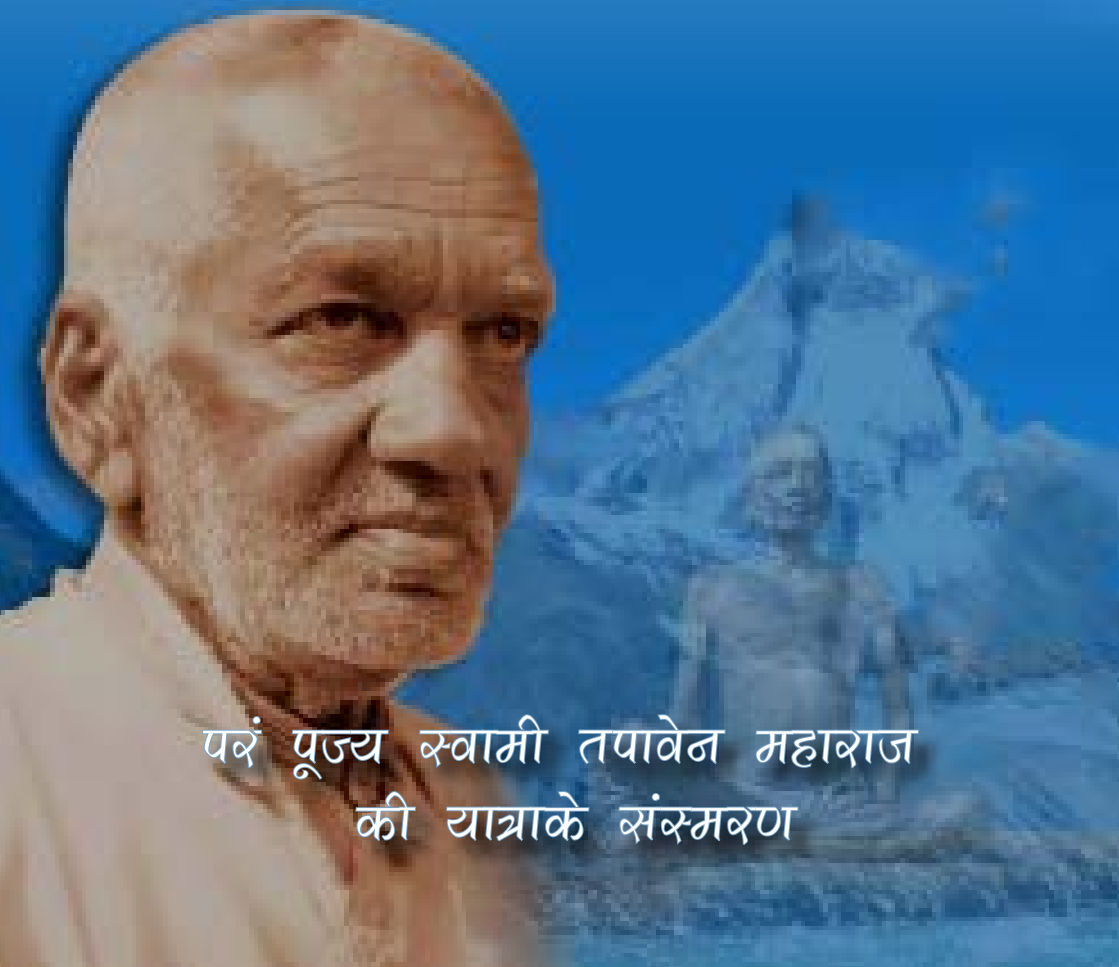

परं पूज्य स्वामी तपावेन महाराज
की यात्राके संस्मरण

# जीवन्मुक्त

गंगोत्री से केदारनाथ तक लगभग एक सौ पंद्रह मील की दूरी है। तथा हृषीकेश से सीधे केदारनाथ तक करीब एक सौ तीस मील की। गंगोत्री से केदारनाथ का मार्ग कुछ कठिन तो है, पर बहुत ही रमणीय है। इसी मार्ग पर पन्द्रह हजार फुट से अधिक उंचाई पर 'पव्वाली' नामक एक छोटे से घाट को पार करना पडता है।

'पव्वाली' सर्वत्र कमनीय काननों से आच्छादित एक सुंदर पर्वत है। यहां मानों अनन्त सुषमा की अनवरत वर्षा हो रही है। यहां कई ऐसे पक्षी भी हैं जो हिमालय के अन्य स्थानों में दुर्लभ हैं। यहां कई विचित्र प्रकार के पुष्प भी दिखायी देते है। मैं अब भी स्पष्ट रूप से स्मरण कर रहा हूं कि जब मैंने उस मार्ग पर यात्रा की थी तो पक्षियों का मनोहर गान सुनते तथा विविध वर्णो के पुष्पों

की आभा देखते देखते पहाड पर चढ़ने के शारीरिक कष्ट को बिलकुल भूल सा गया था। फिर जब इस घाट के उच्च शिखर पर पहुंच गया था, तब तो मैंने अलौकिक सुख का अनुभव किया था। वह दिव्य स्थल प्रकृतिनिरीक्षकों के हृदय तल में प्रचुर प्रमोद रस की वर्षा करता है। इस स्थल का दर्शन मैंने बालकों के समान बडी कुतूहलता के साथ किया था। उत्तर की ओर अनन्त रजत पर्वतों की पंक्तियां थी। दक्षिण की ओर हिन्दुस्तान के मैदान तक फैली हुई रोचक वर्ण की छोटी छोटी शैल मालाएं थी। उधर घाट के उपर भी उंचे उंचे पर्वत थे। वे स्थिर भाव से ऐसे खड़े थे जैसे दृढ़ ध्यानमग्न एकनिष्ठ योगी हो। सचमुच वह दृश्य अत्यन्त हृदयहारी था।

इस घाट को पार करने पर थोडी ही दूर पर 'त्रियुगीनारायण' नामक प्रसिद्ध पुण्यधाम आ जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह धाम भी प्राचीनकाल में तपोनिधि ऋषिपुंगवों की निवास भूमि रहा होगा। 'महाभारत' में ऐसा विवरण मिलता है कि युधिष्ठिर आदि अपनी बदरीकाश्रम की यात्रा के समय

इसी विशिष्ट धाम में भी रहे थे। हिमालय की ऐसी उच्च भूमियों के दर्शन करने पर, जहां ऋषि लोगों ने गाढ तपश्चर्या तथा सूक्ष्म अध्यात्मचिंतन में अपना जीवन बिताया था, किस भारतीय का हृदय नाना प्रकार की उत्कृष्ट भावनाओं से नहीं भर जाएगा? यहां भी अनेक देव मंदिर हैं, जिनमें पुजारी निवास करते हैं।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

# श्री कौशल्या चरित्र

## — 03 —

प्रनवउं परिजन सहित विदेहू।
जाहि राम पद गूढ सनेहू।।

# श्री कौशल्या चरित्र

मनु और शतरूपा के स्वभाव और संस्कार का यह पार्थक्य दोनों के दशरथ और कौशल्या के रूप में जन्म लेने पर भी ज्यों का त्यों बना रहा। महाराज दशरथ का सारा जीवन भावनाओं के द्वारा संचालित था जिसकी अन्तिम परिणति राम के वियोग में प्राण के परित्याग से होती है। कौशल्या के जीवन में उनकी भावनाएं सर्वदा विवेक के द्वारा नियन्त्रित रही। महाराज दशरथ के द्वारा कैकेयी के प्रति पक्षपात को वे जिस सरलता से स्वीकार कर लेती हैं, उसके पीछे उनका अनासक्त और विवेकी स्वभाव ही था। इसीलिए महाराज दशरथ के स्नेह की यत्किंचित न्यूनता उन्हें व्यथित और निराश नहीं बनाती। महाराज दशरथ का समग्र प्रेम पाकर कैकेयी के अहं की तुष्टि होती है। टकराहट की सम्भावना तभी थी यदि कौशल्या का अहं इससे आहत होता। किन्तु इस अहंकार का उत्तर उन्होंने अपने औदार्य से दिया। जहां अहंकार व औदार्य आमने-सामने होते है, दोनों में संघर्ष की भावना नहीं रह जाती। अहंकारी व्यक्ति सम्मान का भूखा होता है। अतः जहां उसे सम्मान पाकर संतुष्टि का बोध होता है, वहां उदार व्यक्ति दाता के आसन पर बैठकर परितृप्ति का रस पा लेता है। यदि एक को खाने के आनन्द की अनुभूति हो रही हो और दूसरे को खिलाने में, वहां झगड़े का कारण भी क्या हो

सकता है! महारानी कैकेयी में सम्मान की प्रबल भूख विद्यमान थी। पति से वह उन्हें प्राप्त ही था। किन्तु पुत्रों के जन्म के पश्चात् वे उनसे भी यही आशा रखती हैं। उन्हें यह देखकर तुष्टि का बोध होता है कि राम अन्य माताओं की तुलना में उन्हें अधिक महत्व देते हैं। कौशल्या अम्बा को इससे आघात लग सकता था किन्तु उनका सहज औदार्य उनके काम आया। वे राम के द्वारा स्वयं को मां कहकर पुकारे जाने पर आपत्ति करती हैं। वे रामभद्र से यही कहती हैं कि तुम्हारी मां तो कैकेयी है।

इसीलिए अयोध्या में राजकुल में जो सौमनस्य था उसका सारा श्रेय कौशल्य अम्बा को जाता है। किन्तु कौशल्या अम्बा को अग्नि-परीक्षा देनी पडी और उसमें वे कंचन की भांति खरी सिद्ध हुई। उन्होंने रामभद्र को युवराज पद देने का प्रस्ताव अपनी ओर से कभी नहीं किया। फिर भी जब उन्हें यह समाचार ज्ञात हुआ तब उन्हें अपार प्रसन्नता हुई। इसे उन्होंने सूर्यकुल की परम्परा के रूप में ग्रहण किया हो यही सहज प्रतीत होता है। यदि उन्हें यह ज्ञात होता कि इस घटना से कितने बड़े अनर्थ का सूत्रपात होनेवाला है तो वे निश्चित रूप से प्रारम्भ में ही श्री भरत को उत्तराधिकारी बनाने का सहर्ष स्वागत करती। पर उन्हें राम और भरत के निकट सम्बन्ध का ज्ञान

था। वे यह भलीभांति जानती थी कि भरत कभी भी अयोध्या के राजसिंहासन पर बैठना स्वीकार नहीं करेंगे। अतः उनको राघवेन्द्र के राज्याभिषेक में प्रत्येक की सहमति दृष्टिगोचर हो रही थी। ऐसी स्थिति में उनके मन में किसी प्रकार की आशंका का उदय नहीं होता। प्रारम्भ से लेकर उनके जीवन में ऐसा कोई क्षण नहीं आता, जब उन्होंने किसी प्रश्न को भेद दृष्टि से देखा हो। उनका विवेक उनके वात्सल्य पर सर्वदा हावी रहा। किशोरावस्था में महर्षि विश्वामित्र की याचना के सन्दर्भ में भी उनकी विवेकमयी भूमिका ही सामने आती है।

# कथा / प्रसंग

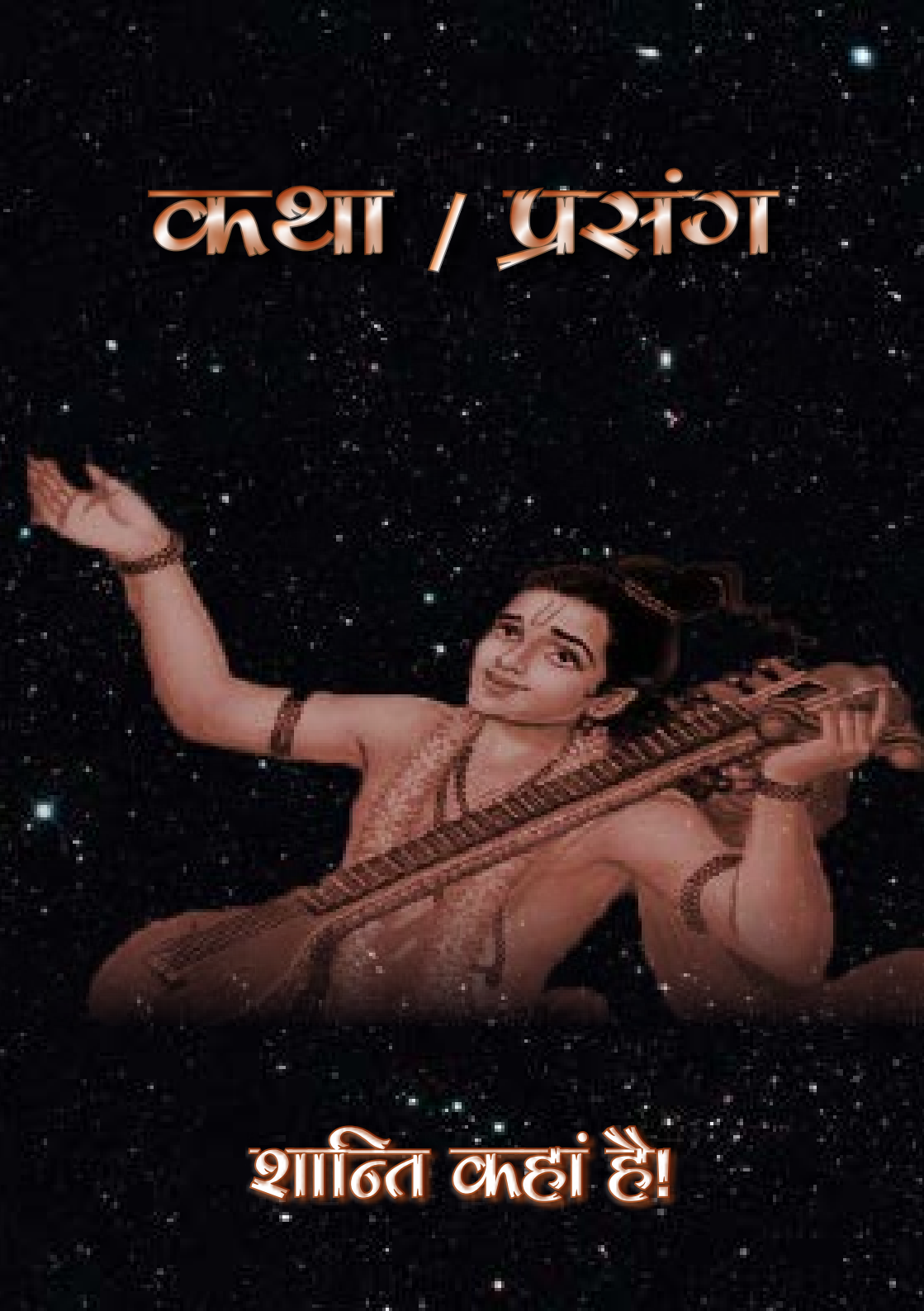

## शान्ति कहां है!

# शान्ति कहां है!

एक एक राजा ने एक चित्रकला की प्रतियोगिता आयोजित की। जिसका विषय था शान्ति। इसके लिए अनेकों महान कलाकार ने सुन्दर चित्र बनाए। उन सब को प्रदर्शन के लिए रखा गया। समस्त दर्शकों ने सब चित्रों को देखा और सराहा। उन सब में एक चित्र को देख कर शान्ति का एहसास होता था। जिसमें था शाम का समय, दूर स्तब्ध भाव से खड़े पहाड़, एक शान्त झील, झील के किनारे एक वृक्ष, उस पर आंख बन्द किये हुए बैठा हुआ एक शान्त पक्षी। इसे देखकर एक नीरव शान्ति का अनुभव हो रहा था। यह चित्र दर्शकों को सर्वोत्कृष्ट लग रहा था।

निर्णय का समय आया। राजा ने उस चित्र को देखा और आगे बढ़ गए। एक ऐसे चित्र के पास जाकर खड़े रहे। जिसमें तूफान के क्षणों का चित्रण था। आकाश में घने काले बादल, तेज वर्षा के बीच में चमकती बिजली, पहाड़ से गिरता

# शान्ति कहां है!

भयानक और तेज झरना, जिससे पहाड़ और भी भयानक लग रहा था। पहाड़ के पीछे एक पेड़, उसकी कोटर में एक घोंसला था। इस घोंसले में एक चिड़िया अपने बच्चों के साथ आंख बन्द किये बैठी थी।

राजा ने सब की कल्पना के परे इस चित्र को विजेता घोषित किया। राजा ने कहा कि, 'शान्ति कोई आवाज रहित बाह्य स्थान नही है, किन्तु समस्त बाह्य अशान्ति के मध्य में भी अपने अन्दर शान्त रहना है।

एक शान्ति बाहरी होती है, और एक आन्तरिक। बाहरी शान्ति अच्छी है, लेकिन आन्तरिक शान्ति मन का वह दिव्य गुण है, जिसे सभी को प्राप्त करना चाहिए। यदि मन अशान्त है तो बाहर कितनी भी शान्ति होगी, उसकी अनुभूति तक नहीं होगी। यदि मन शान्त है, तो बाहर कितना भी शोरगुल हो, इसके बावजूद वह अशान्ति ऐसे व्यक्ति को छूती तक नहीं है।

# Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

## Gita Chanting Class

## Alexy & Timofy - from Russia

# आश्रम / मिशन समाचार

Indian Welcome of our Foreign Students

# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

Taking blessings of
Sri Gangeshwar Mahadevji

Arrival formalities

# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

Handmade Greetings by children

# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

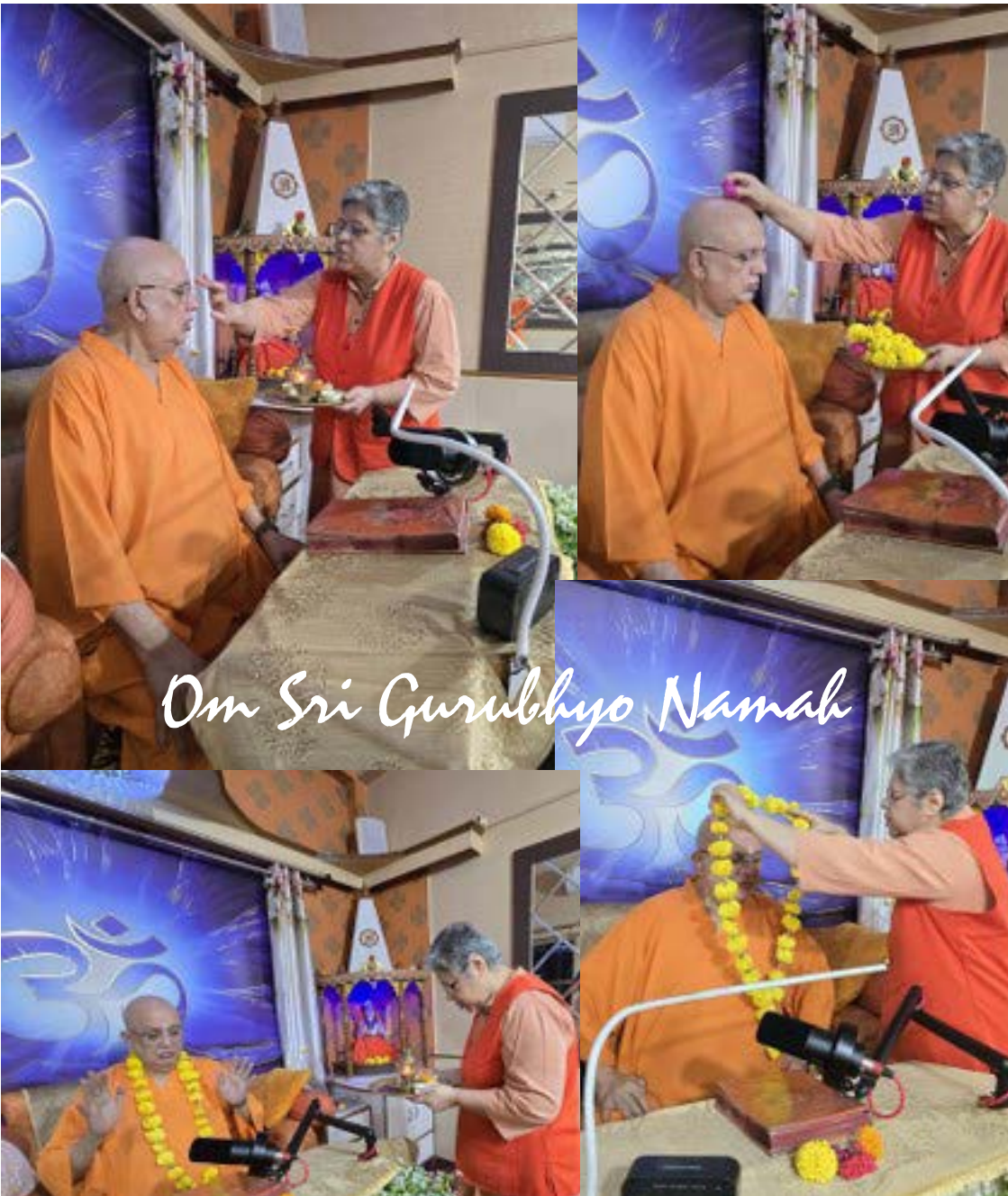

# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

Anniversary Aashirwad

Vikas
&
Radha

# आश्रम / मिशन समाचार

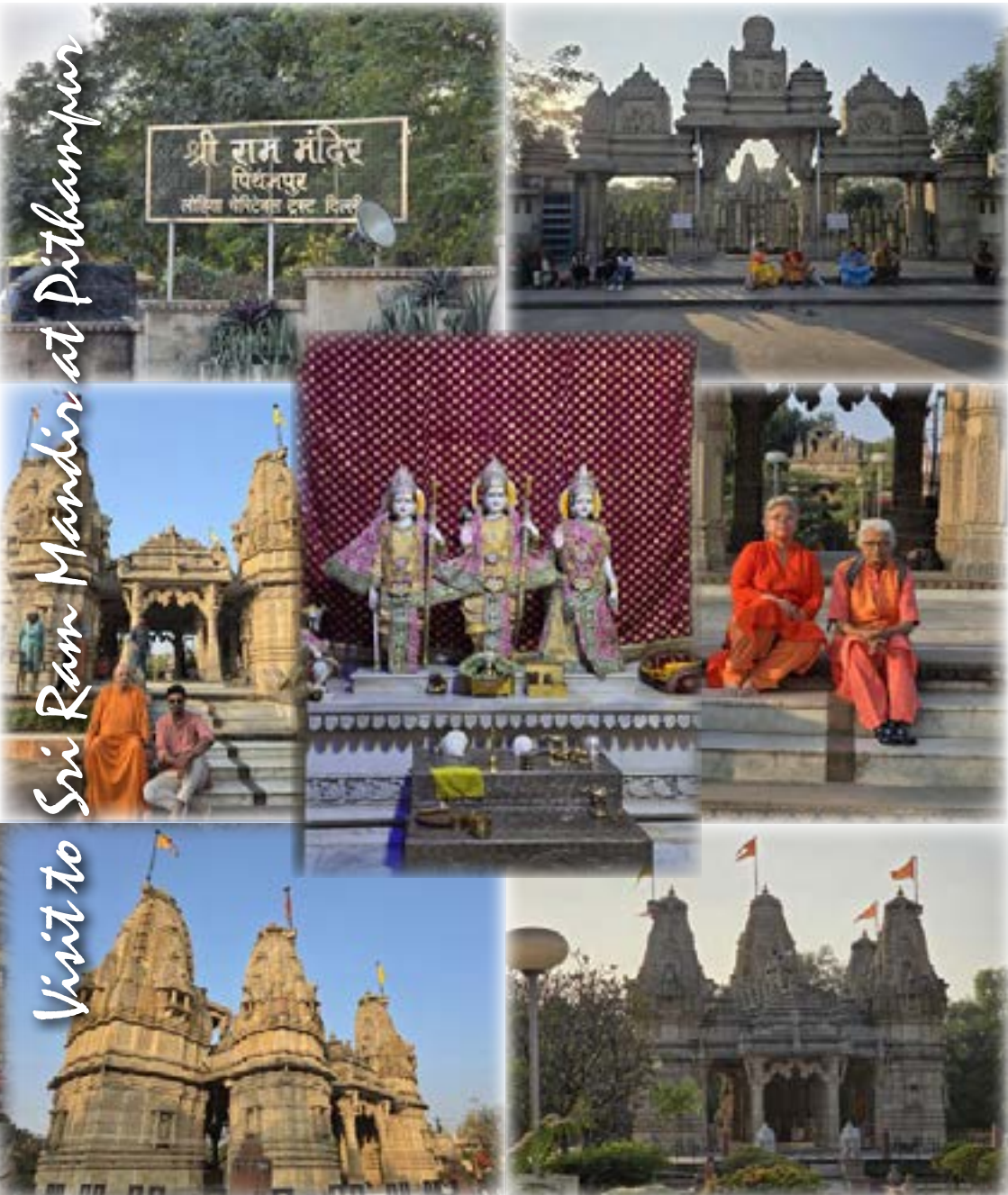

# आश्रम / मिशन समाचार

## Teerth Yatra to Maheshwar

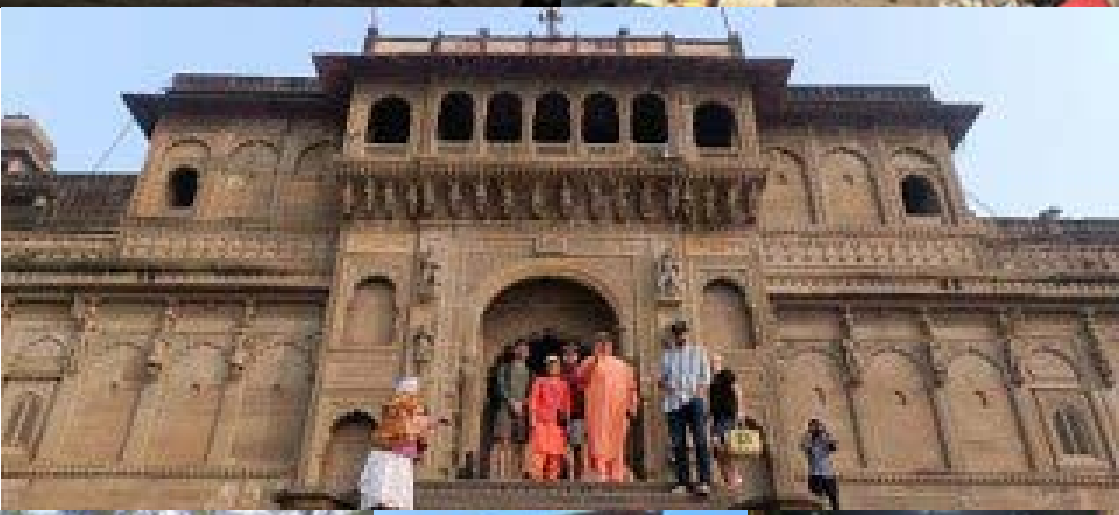

# आश्रम / मिशन समाचार

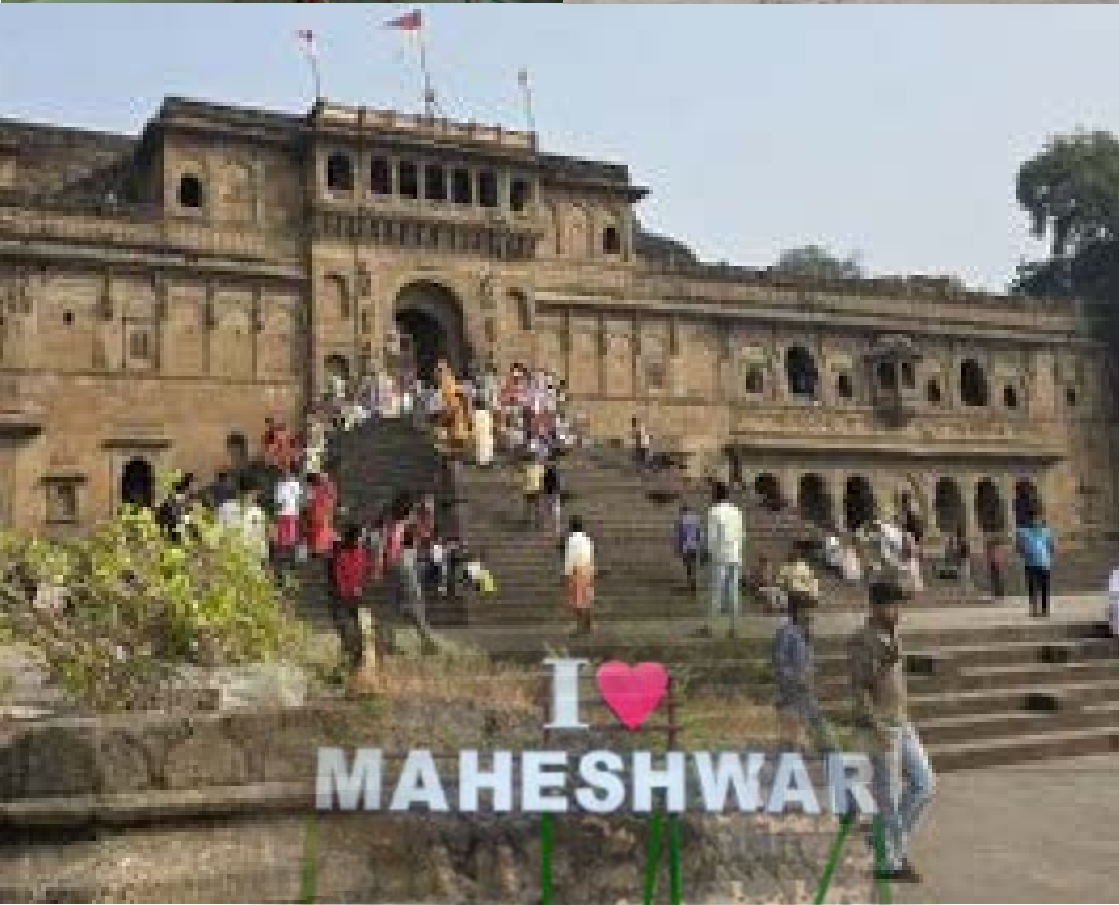

# आश्रम / मिशन समाचार

## श्रीमद् भगवद् गीता

## (शांकर भाष्य समेत ) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः 7.30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

**पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी**

# आश्रम / मिशन समाचार

## गीता ज्ञान यज्ञ

दि. 23 से 29 दिसम्बर 2024;

आत्मज्योति आश्रम, एलोरापार्क, बडौदा

अध्याय - 14 (गुणत्रय विभाग योग)

एवं नारद भक्ति सूत्र

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

---

## गीता ज्ञान यज्ञ

दि. 6 से 12 जनवरी 2025

रामकृष्ण केन्द्र, मणिनगर, अहमदाबाद

अध्याय - 3 (कर्म योग)

एवं नारद भक्ति सूत्र

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

# आश्रम / मिशन समाचार

## गीता श्लोकपाठ

प्रति रविचार, सायं 4 बजे से

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

अध्याय - 12 (भक्ति योग)

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

---

## ओनलाईन सत्संग

प्रति रविवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

श्लोकपाठ / ध्यान / सत्संग

पूज्य स्वामिनी समतानन्दजी

# Internet News

## Talks on (by P. Guruji) :

### Video Pravachans on YouTube Channel

( ☝ Click here)

**Gita / Upanishad/ Prakaran Granthas**

**Sundarkand / Hanuman Chalisa**

**Shiv Mahimna Stotram / Chanting**

**Moral Stories etc**

---

### Audio Pravachans ( ☛ Click here)

**Gita / Upanishad/ Prakaran Granthas**

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

## Monthly eZines

Vedanta Sandesh - Dec '24

Vedanta Piyush - Nov '24

Visit us online :
Vedanta Mission

Check out earlier issues of :
Vedanta Piyush

Join us on Facebook :
Vedanta & Dharma Shastra Group

Subscribe to our WhatsApp Channel
Vedanta Ashram Channel

Published by:
Vedanta Ashram, Indore